

नरेश कानूनगो 'शोभना'
देवास, मध्यप्रदेश

लघुकथा

टाइम-पास

शहर की यह एक व्यस्ततम सड़क है। दिन भर इस सड़क पर दोनों ओर वाहनों की रेलम पेल लगी रहती है। सड़क को पार करने में दस पंद्रह मिनट लग जाते हैं। ऐसे मे यदि किसी बुजुर्ग या महिला को पार जाना होता है तो बड़ी समस्या हो जाती है। उस दिन वो देख रहा था कि एक बुजुर्ग से सज्जन बहुत देर से सड़क के बीच डिवाइडर पर खड़े, दोनों तरफ के तेजी से चलते हुए ट्रेफिक को देख रहे थे, उसने सोचा मैं ही उन सज्जन को सड़क पार करवा देता हूँ। आगे बढ़ उसने उनकी मदद करनी चाही तो वे उसे झिडकते हुए बोले मुझे सड़क नही पार करनी है मै तो यहाँ खड़े होकर दौड़ती भागती जिन्दगी को देख रहा हूं और ऐसा मै हर रोज ही करता हूँ। यहाँ खड़े रहकर मै अपना समय भी बिता लेता हूँ और रफ्तार भरी जिन्दगी का हिस्सा बन जाता हूँ। अब वह भौचक - सा उनका मुख देख रहा था और वे फिर दौडते - भागते वाहनों को देखने में व्यस्त हो गये थे।

आत्म-संतोष

आज ऑफिस में नये प्रोजेक्ट में मिली सफलता ने उसे बहुत खुश कर दिया था। खुशी - खुशी वह जब घर लौटा तो उसने पत्नी को कहा कि अभी हम मंदिर चलेंगे और फ्रेश होने खुद बाथरूम में घुस गया। तैयार हो, दोनों मंदिर की ओर चल दिये। चलते - चलते बातों में पत्नी को ऑफिस में अपने कार्य में मिली अपनी सफलता की बात बताई और मंदिर में कुछ पैसे चढ़ाने की बात की, जिसमें पत्नी ने भी सहमति दिखाई। मंदिर के बाहर पहुंचने पर उनकी नजर सीढियों के पास बैठी एक गरीब सी महिला पर पड़ी, जिसकी गोद में चार छः महीने की बच्ची भी थी और वह बड़ी ही याचक दृष्टि से उन दोनों की ओर देख रही थी। यह देख उसके मन ख्याल आया कि क्यों ना भगवान पर जो पैसे चढ़ाने हैं वे इस महिला को ही क्यों ना दे दिये जायें वह भी तो भगवान पर अर्पण करने जैसा ही होगा। यह बात उसने पत्नी को बताई और उनके हाँ कहने पर उस महिला की ओर बढ़ गया। महिला को पैसे देकर उसके चेहरे पर खुशी के साथ मन में आत्म - संतोष - सा था कि उसने आज एक अच्छा काम किया है। दोनों पति पत्नी जब मंदिर से लौट रहे थे तो दुगुनी खुशी से दोनों के चेहरे दमक रहे थे।